शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -5
May
2025

ललितकला: सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और सौंदर्य चेतना का स्वरूप

डॉ. भक्ति अग्रवाल
ललितकला
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

ललितकला, कला की उन विधाओं को संदर्भित करती है जो सौंदर्यबोध, रचनात्मकता और मानवीय संवेदनाओं की शुद्धतम अभिव्यक्ति हैं। भारत में ललितकला का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रहा है, जो न केवल सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने का माध्यम रही है, बल्कि सामाजिक, आध्यात्मिक और राजनीतिक आंदोलनों की संवाहक भी रही है। यह शोधपत्र भारतीय ललितकला के प्रमुख रूपों — चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, संगीत, नृत्य और नाट्यकला का विश्लेषण करते हुए उसकी सांस्कृतिक, सौंदर्यात्मक और सामाजिक भूमिका पर प्रकाश डालता है। समकालीन काल में ललितकला की उपादेयता केवल सौंदर्य तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह सांस्कृतिक विमर्श और सामाजिक बदलाव का प्रभावशाली उपकरण बन चुकी है। यह शोध कलाओं की निरंतर बदलती प्रकृति और उसकी संभावनाओं को भी रेखांकित करता है।

बीज शब्द

ललितकला, चित्रकला, मूर्तिकला, सौंदर्यशास्त्र, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, भारतीय कला परंपरा, समकालीन कला, रचनात्मकता

प्रस्तावना

ललितकला का तात्पर्य उन कलात्मक विधाओं से है जो सौंदर्य, भावनाओं और विचारों को एक समग्र कलात्मक रूप में प्रस्तुत करती हैं। "ललित" का अर्थ होता है "सुंदर, मनोहर, कोमल", और "कला" का अर्थ है "रचना या कौशल"। अतः ललितकला वह विधा है जिसके माध्यम से मनुष्य अपनी भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों को शुद्ध सौंदर्य की दृष्टि से व्यक्त करता है।

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -5
May
2025

भारत की कला परंपरा अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण रही है। सिंधु घाटी की मूर्तिकला से लेकर अजंता-एलोरा की चित्रकला, खजुराहो की वास्तुकला, और मुग़लकालीन मिनिएचर पेंटिंग्स तक—ललितकला भारतीय आत्मा की छवि प्रस्तुत करती है। ललितकला शब्द में 'ललित' का अर्थ है 'सुंदर' और 'कला' का तात्पर्य है 'रचना'। अतः ललितकला वह अभिव्यक्ति है जो मनुष्य की आंतरिक भावनाओं को सौंदर्य के माध्यम से प्रस्तुत करती है। इन कलाओं में भारतीय जीवनदर्शन, धर्म, आस्था, रीति-रिवाज़, इतिहास, राजनीति और दर्शन का समग्र प्रतिबिंब देखा जा सकता है।

आज के युग में जब तकनीक, बाज़ारवाद और वैश्वीकरण के चलते समाज के सांस्कृतिक स्वरूप में तेज़ी से परिवर्तन हो रहा है, ललितकला की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। समकालीन समय में ललितकला को केवल कलात्मक अभ्यास तक सीमित न रखकर उसे एक सामाजिक दस्तावेज के रूप में देखा जा रहा है, जो समाज की समस्याओं, आंदोलनों, संघर्षों और सौंदर्य की गूढ़ अनुभूति को दर्शाती है। यह शोधपत्र ललितकला के ऐतिहासिक विकास, सामाजिक भूमिका, सौंदर्यदृष्टि और समकालीन संदर्भ में उसकी उपादेयता पर गहराई से विमर्श करता है।

शोध उद्देश्य

1. भारतीय ललितकला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और विकास का विश्लेषण करना।
2. विभिन्न कला रूपों (चित्र, मूर्ति, स्थापत्य आदि) की विशेषताओं का अध्ययन।
3. समकालीन समाज में ललितकला की भूमिका को उजागर करना।
4. ललितकला के माध्यम से सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक चेतना की व्याख्या करना।

शोध विधि

यह शोध गुणात्मक (Qualitative) तथा वर्णनात्मक (Descriptive) अध्ययन पद्धति पर आधारित है। जानकारी एकत्र करने हेतु निम्न माध्यमों का प्रयोग किया गया -

1. ऐतिहासिक-सांस्कृतिक साहित्य और कलात्मक दस्तावेज

2. भारतीय कला विशेषज्ञों के साक्षात्कार
3. आर्ट गैलरी, संग्रहालय और प्रदर्शनियों का अध्ययन
4. विभिन्न युगों के कला रूपों की तुलनात्मक समीक्षा
5. आधुनिक और पारंपरिक कलाकारों के कृतियों का विश्लेषण

शोध विस्तार

भारतीय ललितकला की ऐतिहासिक झलक

1. प्राचीन युग: धर्म और अध्यात्म से प्रेरित कला; बौद्ध, जैन और हिंदू कला की अभिव्यक्तियाँ।
2. मध्यकाल: भक्ति आंदोलन, सूफी संस्कृति और क्षेत्रीय कलाओं का उद्भव।
3. औपनिवेशिक काल: पाश्चात्य प्रभाव, अकादमिक कला शिक्षा, राजा रवि वर्मा और बंगाल स्कूल का उद्भव।
4. स्वतंत्रता संग्राम और आधुनिक काल: कला के माध्यम से राष्ट्रवाद का प्रचार, प्रगतिशील कलाकार समूह (Progressive Artists' Group)।
5. समकालीन युग: इंस्टॉलेशन, परफॉर्मेंस आर्ट, डिजिटल आर्ट, सोशल मीडिया आधारित कला प्रदर्शन।

ललितकला के स्वरूप

भारतीय ललितकला को प्रमुखतः निम्न वर्गों में बांटा जा सकता है —

1. चित्रकला (Painting): अजंता-एलोरा की गुफा चित्रकला, राजस्थानी, पहाड़ी, मुगल मिनिएचर चित्रकला और आधुनिक काल की अमूर्त कला।
2. मूर्तिकला (Sculpture): हड़प्पा संस्कृति से लेकर गुप्तकालीन बुद्ध मूर्तियाँ, खजुराहो की मिथकीय मूर्तियाँ और समकालीन मूर्तिकला।
3. स्थापत्य कला (Architecture): सांची स्तूप, मंदिर निर्माण की नागर और द्रविड़ शैलियाँ, मुग़लकालीन इमारतें और आधुनिक सांस्कृतिक भवन।
4. संगीत एवं नृत्य: भरतनाट्यम, कथकली, कथक, ओडिसी, ध्रुपद और खयाल जैसे संगीत और नृत्य के रूप, जो ललितकला के जीवंत रूप हैं।

5. नाट्यकला: नाट्यशास्त्र के आधार पर विकसित भारतीय रंगमंच, लोकनाट्य (स्वांग, nautanki) और आधुनिक थिएटर।

ललितकला की सामाजिक भूमिका

1. संवेदनशीलता का विकास: कला मानवीय संवेदना को जागृत करती है, जो आधुनिक युग में आवश्यक है।
2. सांस्कृतिक संरक्षण: लोककलाएँ व पारंपरिक शैलियाँ हमारी सांस्कृतिक जड़ों को जीवित रखती हैं।
3. विरोध का माध्यम: समकालीन चित्रकार, थिएटर निर्देशक और परफॉर्मेंस आर्टिस्ट समाज में हो रहे अन्यायों, लैंगिक भेदभाव, पर्यावरणीय संकट आदि विषयों पर कलात्मक हस्तक्षेप कर रहे हैं।
4. आर्थिक भूमिका: कला पर्यटन, आर्ट गैलरी, डिजिटल आर्ट मार्केट से रोजगार व अर्थव्यवस्था को बढ़ावा।

निष्कर्ष

ललितकला भारतीय संस्कृति की आत्मा है। ललितकला केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति मात्र नहीं, बल्कि यह सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक निरंतरता, और व्यक्तिगत अनुभूति की एक सशक्त विधा है। इस शोध से यह स्पष्ट होता है कि ललितकला समय के साथ रूप बदलती रही है, पर उसका उद्देश्य—मनुष्य की संवेदना और उसकी सांस्कृतिक चेतना को उजागर करना—अपरिवर्तित रहा है। भारत की ललितकला परंपरा ने हमेशा से न केवल सौंदर्य की सेवा की है, बल्कि सामाजिक विचार, आध्यात्मिक उन्नयन और राजनीतिक चेतना का माध्यम भी बनी है। आधुनिक तकनीक, वैश्वीकरण और डिजिटल क्रांति ने कला को नए मंच दिए हैं, लेकिन मूलतः ललितकला अब भी आत्मा की खोज और सौंदर्यबोध की यात्रा है।

आज जब सामाजिक मूल्यों का क्षरण, संवेदनाओं का ह्रास और तकनीकी यांत्रिकता ने मानवीय भावनाओं को कुंठित कर दिया है, ललितकला पुनः समाज को संवेदनशील बनाने का एक प्रभावशाली साधन बन सकती है। आवश्यकता है कि इस कला को न केवल संरक्षित

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -5
May
2025

किया जाए, बल्कि उसे नई पीढ़ी से जोड़ा जाए, जिससे न केवल संस्कृति जीवित रहे, बल्कि उसकी चेतना भी जागृत बनी रहे।

संदर्भ

1. कोठारी, कमला. भारतीय कला और संस्कृति, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।
2. कृष्ण, अर्चना. ललितकला का इतिहास, साहित्य भवन, आगरा।
3. Partha Mitter. Indian Art. Oxford University Press.
4. Kapila Vatsyayan. Traditions of Indian Folk Art, IGNCA.
5. Ananda K. Coomaraswamy. The Dance of Shiva.
6. भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण रिपोर्ट्स (ASI)
7. विविध कला प्रदर्शनियों की प्रदर्शनी पुस्तिकाएँ (NGMA, India Art Fair)
8. ऑनलाइन आर्ट गैलरीज और डिजिटल संग्रह (Google Arts & Culture)